ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 24, अंक 219 जनवरी 2022

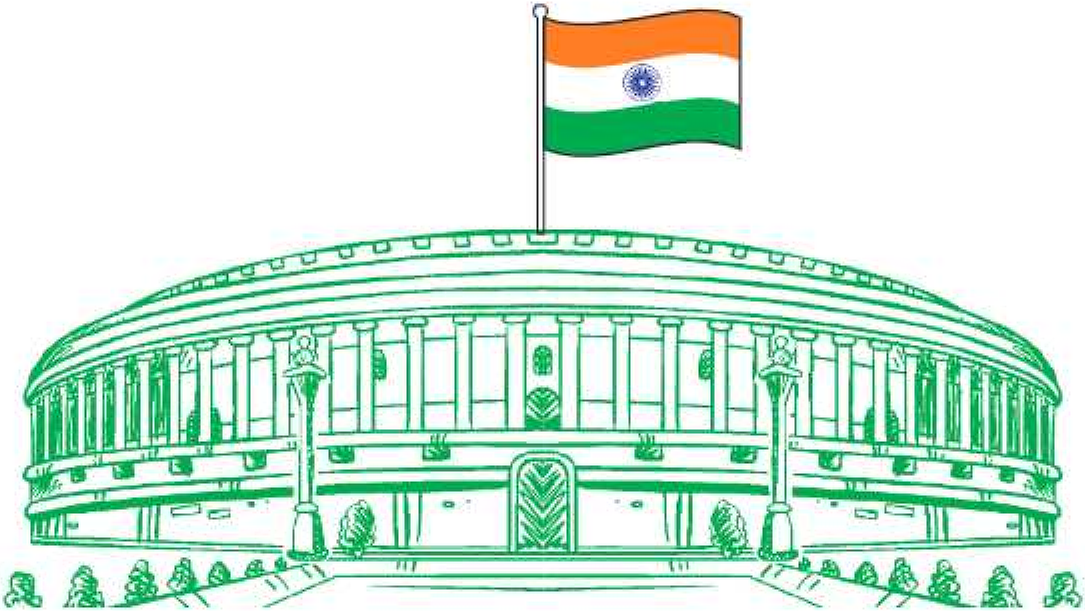

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

आश्वस्त

वर्ष : 24 अंक 219
जनवरी 2022

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	शोषित समाज का आईना : 'घुटन भरी जिंदगी'	डॉ. अभय परमार	04
3.	Materialism in Aravind Adiga's The White Tiger	Virendra Patle Dr. Hitendra Dhote	07
4.	मेरा बचपन मेरे कंधों पर : एक वैचारिकी	डॉ. ओमप्रकाश सैनी	11
5.	मानवतावादी चिंतन का अध्ययन : सिसरो व अम्बेडकर के विचारों के विशेष संदर्भ में	महेश जगोठा (शोधार्थी)	17
6.	भारत में वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति : एक विवेचन	डॉ. दीपा गुप्ता	21
7.	मत्स्य पालन में महिलाओं का योगदान	खुशबू सिमरन	24

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम – आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.– 63040357829
बैंक – भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा– फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 15/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 150/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 1,500/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 10,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेगा।

pointing out that it is Balram's realization of the place of money and power which pushes him ahead on the path of rebellion which ends up with the murder of his master by him. They are eye-openers to law makers and administrators who have political will to deliver justice to the poor and marginalized, rooting out corruption in all forms. Balram brings the message that weak and partial administration may flare up in the form of violence and corruption.

Dr. Hitendra Dhote
Head, Dept. of English
Adarsh Arts And Commerce College
Desaiganj (Wadsa) Dist. Gadhchiroli

References:

1. Amitava Kumar, '*Authenticity and the South Asian Political Novel*', the Boston Review (Via quarts daily) October, 20, 2008.

2. Aravind Adiga's 'The White Tiger', Review, Peter O'donell's Modesy blaise, Nov., 24, 2008.

3. Quoted by Stuart Jeffries from Aravind Adiga's interview with The Guardian, Oct., 16, 2008.

4. Adiga, Aravind, *The White Tiger*, Harper Collins Publishers, India, 2008

मेरा बचपन मेरे कंधों पर : एक वैचारिकी

– डॉ. ओमप्रकाश सैनी

बाबा साहेब ने जाति प्रथा को हिंदू धर्म का सबसे बड़ा कलंक बताया है। मशहूर कवि/शायर अदम गोंडवी जातीय दंश पर प्रहार करते हुए ऊँगली पकड़कर 'चमारों की गली में' चलने को कहते है–

'आइए, महसूस करिए जिंदगी के ताप को ।
मैं चमारों की गली तक ले चलूंगा आपको।।

भूमिका : आधुनिक युग में रंग–भेद, जातीय उत्पीड़न तथा भेदभावपूर्ण व्यवस्था के शिकार जन समुदाय के लिए 'दलित' शब्द सर्वाधिक प्रचलित है। 'दलित' शब्द का शब्दकोशीय अर्थ है– जिसका दलन हुआ हो अर्थात कुचला हुआ, रौंदा हुआ पदाक्रांत आदि। भारतीय समाज में दलितों के लिए अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं– जैसे शूद्र, अछूत, बहिष्कृत, अत्यंज, दास, हरिजन, चांडाल आदि। साहित्य में अनेक विचारकों ने अपने–अपने ढंग से दलित शब्द को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। श्रीमती एनीबेसेंट ने दरिद्र और पीड़ित वर्ग के लिए 'डिप्रेस्ड क्लास' शब्द का प्रयोग किया है। दलित पैंथर्स के घोषणापत्र में अनुसूचित जाति, बौद्ध, कामगार, भूमिहीन मजदूर, गरीब किसान, खानाबदोश, आदिवासी और नारी समाज को दलित कहा गया है। वास्तव में मानव समाज का प्रत्येक प्राणी जो अन्याय–अनीति अत्याचार एवं शोषण का शिकार है वह दलित है। भारतीय समाज आदिकाल से ही वर्ण व्यवस्था पर आधारित रहा है। आगे चलकर यह वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई। वर्ण व्यवस्था में गुण व कर्म के अनुसार वर्ण बदलने की व्यवस्था थी लेकिन जाति व्यवस्था ने मनुष्य को एक ही वर्ण में रहने को मजबूर कर दिया। शूद्रों को अस्पृश्य, त्याज्य और अछूत मानकर वैदिक शिक्षा यज्ञ आदि कर्मों से वंचित कर उन्हें सदा–सदा के लिए अज्ञान के

कारण बेबस माँ उसे पढ़ा नही सकी। अपनी नेक–नियति और मजबूरी का हवाला देती हुई माँ श्यौराज को सान्त्वना देते हुए कहती है–'जो तू पढ़नो चाहत है तो पहले अपने मर गए बाप को वापस बुला। बाप नाँय लावत तो पहले अपने खान कूँ रोटी, पहन्न को लत्ता और फीस किताबन कूँ पैसा ला। अब तू स्कूल जइयो। का तू जानत नहीं है कि तू भिकारिया को सगो बेटा नाँय हैं। तो पढ़िवे की जिद नाँय छोडेगो तो जे तेरे संग–संग हम सबको मारि–मारि के घर तें बाहर निकाल देगो।'[14] सच है बालक जहां जीविका के लिए कठिन संघर्ष करता है वहां शिक्षा के लिए भी तन–मन मसोस कर गुजारा करता है। यह भी सच है कि दलित बच्चों को शिक्षा प्राप्ति के लिए उचित समय और वातावरण नहीं मिलता। संपन्न वर्ग के लिए तो वे कोल्हू के बैल ही हैं। दिन–भर मेहनत मजदूरी करें अमीरों के तलुवे सहले, यही तो जीवन है उनका। लेखक इस तथ्य से भलीभांति परिचित है कि शिक्षा ही एक ऐसा कारगर अस्त्र है जिसके सहारे जीवन के समस्त अंधकार को मिटाया जा सकता है। लेखक ने अपने भविष्य को सुधारने के लिए शिक्षित होने का प्रण लिया। लेखक शिक्षा प्राप्ति के मामले में सौभाग्यशाली रहा है। जीवन में आर्थिक सामाजिक मोर्चे पर झूझते हुए, मार्ग में आने वाली समस्त कठिनाइयों को दरकिनार करते हुए, उच्च शिक्षा हासिल करने का जो बीड़ा लेखक ने उठाया उसे अपने अध्यापक के सहयोग से हासिल भी किया। शिक्षा ने बालक की किस्मत को ही बदल दिया। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात वह न केवल स्वयं आत्मनिर्भर बना बल्कि अपने समाज के लिए भी एक मिसाल कायम कर आगे बढ़ने का साहस दिया।

उपसंहार : समग्रतः कहा जा सकता है कि 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' आत्मकथा में लेखक ने दलितों के अभिशाप भरे जीवन का खाका खींचा है। लेखक दलितों की दयनीय स्थिति, सामाजिक अस्पृश्यता, घोर गरीबी, अशिक्षा, बालश्रम कुपोषण, बेकारी जैसी समस्याओं को उजागर करने में पूर्णतः सफल रहा है। पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों के बोझ तले दबा हुआ लेखक भविष्य को संवारने के लिए चिंतित है। भविष्य को समुन्नत बनाने के लिए लेखक ने बचपन से ही कठोर परिश्रम किया वह भावी युवा पीढ़ी के लिए अनुकरणीय बन गया। भूख–गरीबी, अभाव, अपमान, जलालत और बेरोजगारी से मुक्ति पाने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा अस्त्र है। आधुनिक युग में शिक्षा के प्रति जागरूक होकर ही लक्ष्य हासिल किया जा सकता है, जिसे लेखक ने अपनी अदम्य शक्ति, साहस और शौर्य के बलबूते कर दिखाया है। वह आज साहित्य, शिक्षा के जिस मुकाम पर है वह डगर इतनी आसान नहीं रही। वास्तव में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा हासिल करने तक लेखक ने जाने–अनजाने जो सहा वह झकझोर देने वाला है। अकेला निहत्था बालक, बिल्कुल शांत चित्त से, जीवन की कठोर, विपरीत स्थितियों से लोहा लेते हुए, सधे कदमों से आगे बढ़ता गया, वह दिल को छू जाता है। संसार में ऐसे अनथक यौद्धा बिरले ही होते हैं। प्रस्तुत आत्मकथा में लेखक ने एकदम बलवती, सहज–सरल, अपेक्षित एवं भावानुकूल साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया है। भाषा में भावुकता का प्रबल आवेग जितना गहरा है कला पक्ष उतना ही गरिमामयी है। लेखकीय शैली के विषय में धर्मवीर भारती ने कहा है–'वर्णन में आप अपनी शैली में रहे हो। आपकी शैली दूसरे लोगों से अलग पहचान की है। वह शांत और ज्यादा प्रभावकारी है।'[15] आत्मकथा से इत्तर भी लेखक ने पत्रकारिता, कविता, कहानी आदि विधाओं के माध्यम से अपनी लेखकीय प्रतिभा का परिचय दिया है। प्रस्तुत आत्मकथा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह काव्यात्मक विधा में है। इसमें आत्मरस भी है, दर्द भी है, पीड़ा और बेचैनी भी है और संवेदना का ताप भी है, वहीं अनोखे अंदाज में लिखने का एक बड़ा निहितार्थ जो

विरले लेखको में ही होता है। निःसंदेह यह आत्मकथा दलित साहित्य के साथ–साथ हिंदी साहित्य की सिरमौर है।

अस्मिता मूलक विमर्शो में दलित विमर्श आज साहित्यिक चर्चा के केंद्र में हैं। साहित्य के साथ दलित शब्द जुड़ते ही उसकी व्यापकता और अधिक क्रांति बोधक हो जाती है। सातवें दशक में शिक्षित होकर कार्य क्षेत्र में उतरे दलित लेखकों की जद्दोजहद और संघर्ष ने हिंदी दलित साहित्य की जो भूमि तैयार की उसका नोटिस गैर दलितों ने काफी विलंब से लिया जबकि दलित पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन संघर्ष के लिए अनुकूल साबित हुआ। निःसंदेह गत वर्षो में दलित साहित्य आंदोलन से हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक और विद्वानों के दृष्टिकोण में बदलाव की प्रक्रिया का जो रूप उभरा है वह एक नई उम्मीद जगाता है।

डॉ. ओम प्रकाश सैनी (डी. लिट)
एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग
आर.के एस डी कॉलेज, कैथल, हरियाणा।
दुरवाणी : 9466544566

संदर्भः–

1. विमल थोरात, मराठी दलित कविता और साठोत्तरी हिंदी कविता में सामाजिक, राजनीतिक चेतना, पृष्ठ– 29
2. डॉ. सुरेंद्र शर्मा, हिंदी दलित साहित्य, मनीष पब्लिकेशंस, दिल्ली, पृष्ठ– 8
3. ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृष्ठ–58
4. कांति मोहन, प्रेमचंद और अछूत समस्या, पृष्ठ–5
5. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कंधों पर, वाणी प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ– 5 (भूमिका)
6. वही, पृष्ठ– 5 (भूमिका)
7. वही, पृष्ठ– 21
8. वही,पृष्ठ– 20
9. वही, पृष्ठ– 33
10. वही, पृष्ठ– 22
11. वही, पृष्ठ– 40
12. वही, पृष्ठ– 41
13. वही, पृष्ठ– 167
14. वही, पृष्ठ– 65
15. वही, फ्लैप

मानवतावादी चिंतन का अध्ययन सिसरो व अम्बेडकर के विचारों के विशेष संदर्भ में

– **महेश जगोठा** (शोधार्थी)

सार – प्रस्तुत शोध पत्र मानवताबाद की गहराईयों का खण्डन कर मानवतावादी चिंतन की दार्शनिक व व्यावहारिक अभिव्यक्ति को दर्शाता है। जो कहीं न कहीं प्रथम मानवतावादी विचारक सिसरो के विचारों के साथ–साथ अम्बेडकर के विचारों में प्रस्तुत मानवतावादी पुट के व्यवहारिक पक्ष को भी उजागर करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी के द्वारा मानवतावाद की बुनियादी समझ के साथ–साथ सिसरो व अम्बेडकर के मानवतावादी चिंतन में तुलनात्मक भेद कर मानवतावाद के दार्शनिक व व्यवहारिक पक्षों को उजागर कर इनके द्वारा प्रस्तुत मूल उद्देश्यों से भी अवगत कराने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्द – अभिव्यक्ति, आचरण, उत्पीड़न, स्वतंत्रता, अंतर्निहित गरिमा।

प्रस्तावना

मानवतावाद दर्शन की स्थापित शाखा न होकर एक दार्शनिक दृष्टिकोण है, जो कहीं न कहीं मानव मूल्यों, संवेदनाओं, अनुभव व मानवज्ञान की पूर्णता को प्रस्तुत करता है। मानवतावाद से आशय उन सभी विभिन्न विचारों व दृष्टिकोणों से है जिनके मूल में मानवीय प्रतिष्ठा, सम्मान, प्रेम लोक कल्याण व जीवन को उच्चतम मूल्य मानने का भाव निहित होता है।[1]

इस प्रकार मानवतावाद जहां मानव की आंतरिक गरिमा को बनाये रखने की बात करता है। वही अनेक विचारक है जिन्होंने मानवतावाद या फिर यूं कहे मानवीय मूल्यों व गरिमा को बनाये व बचाये रखने के संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त किया है।

यदि हम मानवतावादी माने जाने वाले व्यक्तित्व की शर्तों को देखें तो जरूरी नहीं वो किसी उच्च वर्ग